मोमिन की पाँच निशानियाँ हैं: इक्यावन रकअत नमाज़ अदा करना, अरबईन की ज़ियारत के लिए जाना, दाहिने हाथ में अंगूठी पहनना, सज्दा करते समय माथा मिट्टी पर रखना, और "बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम" को ऊँची आवाज़ में पढ़ना।

इमाम हुसैन का अरबईन

अरबईन, इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम) की शहादत के चालीसवें दिन का स्मरण है। इमाम हुसैन 61 हिजरी में आशूरा के दिन शहीद हुए थे और यह दिन इस्लामी कैलेंडर के अनुसार 20 सफ़र को पड़ता है।

कुछ ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, करबला के बंदी 61 हिजरी के 20 सफ़र को दमिश्क से लौटते समय करबला पहुँचे और इमाम हुसैन (अ.स.) की क़ब्र की ज़ियारत की। हालांकि, शैख मुफ़ीद और शैख तूसी जैसे विद्वानों का मत है कि वे सीधे मदीना लौट गए थे।

यह भी वर्णित है कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) के सहाबी जाबिर इब्न अब्दुल्लाह अल-अंसारी इस दिन इमाम हुसैन की क़ब्र पर आने वाले पहले ज़ायर थे।

अरबईन की ज़ियारत इस दिन के विशेष धार्मिक कर्मों में से एक है। इमाम हसन अस्करी (अ.स.) की एक हदीस के अनुसार, यह एक सच्चे मोमिन की पहचान मानी जाती है।

इमामों के समय से ही अरबईन पर करबला की यात्रा शिया मुसलमानों की परंपरा रही है। आज लाखों श्रद्धालु, विशेष रूप से पैदल चलकर, करबला पहुँचते हैं। यह यात्रा विश्व की सबसे बड़ी शांतिपूर्ण धार्मिक यात्राओं में से एक मानी जाती है।

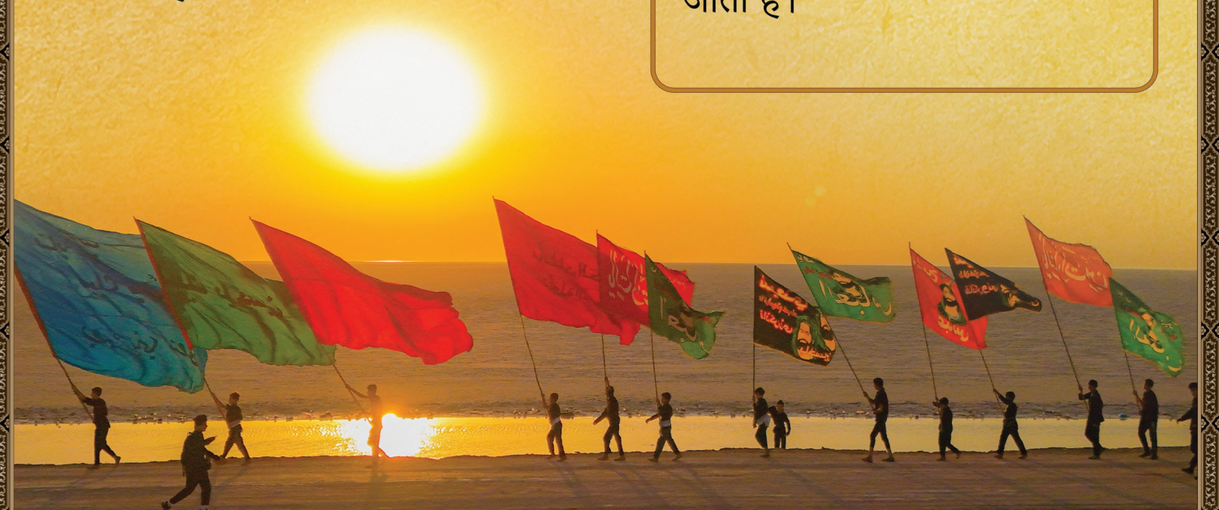

Contact number: +983133944495

नासेरियेह इस्लामी मदरसा, इस्फ़हान, इस्लामी गणराज्य ईरान